"आदिपुराण में श्रीकृष्ण का वाक्य अर्जुन के प्रति"

रामनाम सदा ग्राही रामनाम प्रियः सदा। भक्तिस्तस्मै प्रदातव्या न च मुक्तिः कदाचन।।371।।

हे अर्जुन ! जो सदा सर्वदा श्रीरामनाम का उच्चारण करते हैं और जिन्हें श्रीरामनाम प्रिय है उन लोगों को मैं भक्ति प्रदान करता हूँ कभी भी भूलकर भी मुक्ति नहीं देता हूँ।

गायन्ति रामनामानि वैष्णवाश्च युगे युगे। त्यक्त्वा च सर्वकर्माणि धर्माणि च कपिध्वज।।372।।

हे अर्जुन ! प्रत्येक युग में वैष्णवजन सभी कर्मों और धर्मों को छोड़कर श्रीरामनाम का गान करते रहते हैं।

रामनामैव नामैव रामनामैव केवलम्। गतिस्तेषां गतिस्तेषां गतिस्तेषां सुनिश्चितम्।।373।।

उन वैष्णवों की निश्चित रूप से श्रीरामनाम ही परम गति है अर्थात् वैष्णवों का जीवन सर्वस्व श्रीरामनाम ही है।

श्रद्धया हेलया नाम वदन्ति मनुजा भुवि। तेषां नास्ति भयं पार्थ रामनामप्रसादतः।।374।।

हे पृथा पुत्र अर्जुन ! जो मनुष्य श्रद्धा से अथवा अनादर भाव से भी पृथिवी पर श्रीरामनाम का उच्चारण करते हैं श्रीरामनाम महाराज की कृपा से उन्हें कहीं भी किसी भी प्रकार का भय नहीं है।

रामनाम रता यत्र गच्छन्ति प्रेम सम्प्लुताः। भक्तांस्ताननुगच्छन्ति मुक्तयः स्तुतिभिस्सह।।375।।

भगवत्प्रेमरस में भीने हुए श्रीरामनामानुरागी भक्तजन जहॉ-जहॉ जाते हैं वहॉ-वहॉ पॉचों प्रकार की मुक्तियॉ विभिन्न प्रकार से स्तुति करती हुई उन भक्तों का अनुगमन करती है।

मानवा ये सुधासारं रामनाम जपन्ति हि। ते धन्या मृत्यु संत्रासरहिता रामवल्लभा।।376।।

जो मानव अमृत के मूसलाधार बौछारस्वरूप श्रीरामनाम का जप करते हैं। वे लोग धन्य, मृत्यु के भय से रहित एवं भगवान् श्रीराम के अत्यन्त प्रिय हैं।

नामैव परमा मुक्तिर्नामैव परमा गतिः। नामैव परमा शान्तिर्नामैव परमा मतिः।।377।।
नामैव परमा भक्तिर्नामैव परमा धृतिः। नामैव परमा प्रीतिर्नामैव परमा स्मृतिः।।378।।
नामैव परमं पुण्यं नामैव परमं तपः। नामैव परमो धर्मो नामैव परमो गुरुः।।379।।
नामैव परमं ज्ञानं नामैव चाखिलं जगत्। नामैव जीवनं जन्तोर्नामैव विपुलं धनम्।।380।।
नामैव जगतां सत्यं नामैव जगतां प्रियम्। नामैव जगतां ध्यानं नामैव जगतां परम्।।381।।
नामैव शरणं जन्तोर्नामैव जगतां गुरुः। नामैव जगतां बीजं नामैव पावनं परम्।।382।।

हे अर्जुन ! श्रीरामनाम ही परम मुक्ति, परम गति, परम शान्ति परमबुद्धि, परम भक्ति, परम धैर्य, परम प्रेम, परम स्मृति, परमपुण्य, परम तप, परम धर्म, परम गुरु, परम ज्ञान, सम्पूर्ण जगत्, जन्तुओं का जीवन, पर्याप्त धन, जगत् में सत्य पदार्थ, जगत् में एकमात्र प्रेमास्पद, जगत् में एक मात्र ध्यान का विषय, जगत् से सर्वदा परे, जीवमात्र का एकमात्र शरण, जगद्गुरु जगत् का मूल कारण परम पवित्र है।

रामनाम रता ये च ते वै श्रीरामभावुकाः। तेषां संदर्शनादेव भवेद्भक्ती रसात्मिका।।383।।

जो लोग निरन्तर श्रीरामनाम के जप में निरत है वे निश्चय ही श्रीरामजी के भावुक भक्त हैं उन भक्तों के दर्शन से ही रसात्मिका भक्ति प्रकट हो जाती है।

कामादि गुण संयुक्ता नाममात्रैक बान्धवाः। प्रीतिं कुर्वन्ति ते पार्थ न तथा जित षड्गुणाः।।384।।

हे पार्थ ! जो लोग कामक्रोधादि विकारों से युक्त होते हुए भी श्रीरामनाम को ही अपना सर्वस्व मानते हैं वे लोग जिस प्रकार मुझसे प्रेम करते हैं वैसा प्रेम कामक्रोधादि दोषों को जीतने वाले लोग नहीं कर पाते हैं।

तं देशं पतितं मन्ये यत्र नास्ति सु वैष्णवः। रामनाम परो नित्यं परानन्द विवर्द्धनः।।385।।

हे पार्थ ! मैं उस देश को पतित (महानिन्दनीय) मानता हूँ जहाँ नित्य परमानन्द को बढ़ाने वाले, श्रीरामनाम परायण सुन्दर वैष्णव नहीं रहते हैं।

रामनाम रता जीवा न पतन्ति कदाचन। इन्द्राद्यास्सम्पतन्त्यन्ते तथा चान्येऽधिकारिणः।।386।।

श्रीरामनाम के जप में निरत जीवों का कभी भी पतन नहीं होता है। श्रीरामनामानुरागियों के अतिरिक्त इन्द्रादि देवताओं तथा दूसरे अधिकारियों का अन्त में पतन निश्चित है।

राम स्मरण मात्रेण प्राणान्मुञ्चन्ति ये नराः। फलं तेषां न पश्यामि भजामि तांश्च पार्थिव।।387।।

हे राजन् ! जो मनुष्य श्रीरामनाम का स्मरण मात्र करके अपने प्राणों को छोड़ता है उनके फल को मैं नहीं देखता हूँ और मैं उनका भजन करता हूँ।

नाम स्मरण मात्रेण नरो याति निरापदम्। ये स्मरन्ति सदा रामं तेषां ज्ञानेन किं फलम्।।388।।

श्रीरामनाम के स्मरणमात्र से मनुष्य आपत्ति शून्य पद को प्राप्त करता है जो लोग सदा सर्वदा श्रीरामनाम का स्मरण करते हैं उनको ज्ञान से क्या प्रयोजन है?

नामैव जगतां बन्धुर्नामैव जगतां प्रभुः। नामैव जगतां जन्म नामैव सचराचरम्।।389।।

श्रीरामनाम ही सम्पूर्ण जगत् का बन्धु है वही सबका स्वामी है वही सबका उत्पत्ति स्थान है चर अचर सम्पूर्णजगत् वही है।

नाम्नैव धार्यते विश्वं नाम्नैव पाल्यते जगत्। नाम्नैव नीयते नाम नाम्नैव भुज्यते फलम्।।390।।

सम्पूर्ण विश्व श्रीरामनाम के द्वारा ही धारण किया जा रहा है। सम्पूर्ण जगत् नाम के द्वारा ही पालित है। नाम के द्वारा ही नाम ले जाया जाता है। नाम के द्वारा ही फल भोगा जाता है।

नाम्नैव गृह्यते नाम गोप्यं परतरात्परम्। नाम्नैव कार्यते कर्म नाम्नैव नीयते फलम्।।391।।

अत्यन्त गोपनीय एवं परात्पर श्रीरामनाम के द्वारा ही नाम ग्रहण किया जाता है। नाम के द्वारा ही सारे कर्म कराये जाते हैं और नाम के द्वारा ही फल प्राप्त कराये जाते हैं।

नामैव चाङ्गशास्त्राणां तात्पर्यार्थमुत्तमम्। नामैव वेद सारांशं सिद्धान्तं सर्वदा शिवम्।।392।।

समस्त वेदांग शास्त्रों का उत्तम तात्पर्यार्थ श्रीरामनाम ही है और समस्त वेदों का सारांश सिद्धान्त सर्वदा कल्याणस्वरूप श्रीरामनाम ही है।

नाम्नैव नीयते मेधा परे ब्रह्मणि निश्चला। नाम्नैव चञ्चलं चित्तं मनस्तस्मिन्प्रलीयते।।393।।

श्रीरामनाम से ही निश्चला बुद्धि परब्रह्म में हो पाती है और श्रीरामनाम के जप से ही चञ्चलचित्त व मन परब्रह्म में विलीन होता है।

श्रीरामस्मरणेनैव नरो याति पराङ्गतिम्। सत्यं सत्यं सदा सत्यं न जाने नामजं फलम्।।394।।

श्रीरामनाम के स्मरण से ही मनुष्य सर्वश्रेष्ठ गति को प्राप्त करता है यह बात सत्य एवं सदासत्य है कि श्रीरामनाम से होने वाले फल को मैं नहीं जानता हूँ।

रामनाम प्रभावोऽयं सर्वोत्तम उदाहृतः। समासेन तथा पार्थ वक्ष्येऽहं तव हेतवे।।395।।

हे पार्थ ! श्रीरामनाम का यह सर्वोत्तम प्रभाव कहा गया और तुम्हारे लिए संक्षेप से मैं पुनः कहूँगा।

न नाम सदृशं ध्यानं न नाम सदृशो जपः। न नाम सदृशस्त्यागो न नाम सदृशी गतिः।।396।।

न नाम सदृशं तीर्थं न नाम सदृशं तपः। न नाम सदृशं कर्म न नाम सदृशः शमः।।397।।

न नाम सदृशी मुक्तिर्न नाम सदृशः प्रभुः। ये गृह्णन्ति सदा नाम त एव जित षड्गुणाः।।398।।

श्रीरामनाम के सदृश न कोई ध्यान है, न कोई जप है, न कोई त्याग है, न कोई गति है, न कोई तीर्थ है, न कोई शम (मनोनिग्रह) है, न कोई मुक्ति है, न कोई समर्थ है, जो लोग सदा सर्वदा श्रीरामनाम का उच्चारण करते हैं। वास्तव में वे लोग ही छः विकारों को जीतने वाले हैं।

कुर्वन् वा कारयन्वाऽपि रामनामजपँस्तथा। नीत्वा कुल सहस्राणि परंधामाधिगच्छति।।399।।

जो कोई श्रीरामनाम का जप करते हैं अथवा जप करवाते हैं वे हजारों कुल कुटुम्बियों के साथ भगवान् के परम धाम को जाते हैं।

नाम्नैव नीयते पुण्यं नाम्नैव नीयते तपः। नाम्नैव नीयते धर्मो जगदेतच्चराचरम्।।400।।

श्रीरामनाम से ही पुण्य प्राप्त किया जाता है तपस्या प्राप्त होती है धर्म प्राप्त किया जाता है यह चराचर जगत् श्रीरामनाम से ही पालित एवं व्यवस्थित है।

रामनाम प्रभावेण सर्व सिद्धीश्वरो भवेत्। विश्वासेनैव श्रीरामनाम जाप्यं सदा बुधैः।।401।।

श्रीरामनाम के प्रभाव से साधक सभी सिद्धियों का स्वामी हो सकता है। अतः विद्वानों को सदा विश्वासपूर्वक श्रीरामनाम का जप करना चाहिए।

शान्तो दान्तः क्षमाशीलो रामनाम परायणः। असंख्य कुलजानां वै तारणे सर्वदा क्षमः।।402।।

जो शान्त है अर्थात् जिन्होंने अपने मन को वश में कर लिया है और दांत हैं अर्थात् जो इन्द्रियों को वश में कर लिया है, जो क्षमाशील हैं और जो रामनाम परायण है वे लोग निश्चय ही असंख्य कुल में उत्पन्न जीवों को भवसागर से तारने में सदा समर्थ होते हैं।

ये नाम युक्ता विचरन्ति भूमौ त्यक्त्वाऽर्थकामान्विषयांश्च भोगान्।
तेषां च भक्तिः परमा च निष्ठा सदैव शुद्धा शुभगा भवन्ती।।403।।

जो लोग अर्थ, काम, विषयों और भोगों का त्याग करके श्रीरामनाम के जप स्मरण से युक्त होकर पृथिवी पर विचरण करते हैं उनकी भक्ति और परम निष्ठा सदैव शुद्ध और सुन्दर होती है।

स्मरन्यो रामनामानि त्यक्त्वा कर्मापि चाखिलम्। स पूतः सर्वपापेभ्यः पद्मपत्रमिवाम्भसा।।404।।

जो सम्पूर्ण कर्मों का त्याग करके श्रीरामनाम का स्मरण करता है वह समस्त पापों से पवित्र हो जाता है जैसे कमल का पत्र जल में रहकर भी जल से अलग रहता है वैसे ही वह संसार में रहकर भी संसार से अलग रहता है।

त्यक्त्वा श्रीरामनामानि कर्म कुर्वन्ति येऽधमाः। तेषां कर्माणि बन्धाय न सुखाय कदाचन।।405।।

जो लोग श्रीरामनाम का त्याग करके दूसरे कर्मों का अनुष्ठान करते हैं वे सब अधम है उनके सारे कर्म बन्धन के हेतु हैं कभी भी सुख देने वाले नहीं है।

यस्य चेतसि श्रीराम नाम माङ्गलिकं परम्। स जित्वा सकलॉल्लोकान् परंधाम परिव्रजेत्।।406।।

जिसके चित्त में सदा सर्वदा परम मंगलमय श्रीरामनाम विराजमान हैं वह सभी लोकों को जीतकर भगवान् के दिव्य धाम को प्राप्त करता है।

नाम युक्ता जना पार्थ जात्यन्तर समन्विताः। प्रीतिं कुर्वन्ति श्रीरामं न तथा नष्ट षड्गुणाः ।।407।।

हे पार्थ ! नीच जाति में उत्पन्न भक्त भी श्रीरामनाम से युक्त होकर भगवान् श्रीराम से जैसी प्रीति करते हैं वैसी प्रीति उत्तम कुल में जन्म लेने वाले कामादि विकारों को जीतने वाले ब्राह्मणादि नहीं करते हैं श्रीरामनाम से रहित होने से।

गायन्ति रामनामानि सततं ये जना भुवि। नमस्तेभ्यो नमस्तेभ्यो नमस्तेभ्यः पुनः पुनः।।408।।

जो लोग पृथिवी पर निरन्तर श्रीरामनाम का गान करते रहते हैं उनको नमस्कार है, उनको नमस्कार है उनको बारम्बार नमस्कार है।

रामनामाश्रया ये वै भावुकाः प्रेम संप्लुताः। ते कृतार्थास्सदा तात सत्यं सत्यं न चान्यथा।।409।।

हे तात ! जो भावुक भगवत्प्रेमरस में निमग्न होकर श्रीरामनाम का आश्रय लेते हैं वे लोग सदा सर्वदा के लिए कृतार्थ हैं मेरी वाणी अन्यथा नहीं है सत्य है सत्य है।

इति विज्ञापितं तात स्वया बुद्धया विधारय। रामनाम प्रसादेन सर्वं सुखमवाप्स्यसि।।410।।

हे तात अर्जुन ! मेरे द्वारा विज्ञापित रहस्य को अपनी बुद्धि से विशेष रूप से निर्धारण करो इतना तो सच है कि श्रीरामनाम की कृपा से तुम सभी सुखों को प्राप्त करोगे।

तां नामगाथां विचरन्ति भूमौ गीत्वा सदा ते पुरुषाः सुधन्याः।
ये नामगाथा परतत्त्वनिष्ठास्ते धन्य धन्याः भुवि कृत्य पुण्याः।।411।।

जो लोग श्रीरामनाम की महिमा का गान करते हुए पृथिवी पर विचरण करते हैं वे लोग सदासर्वदा के लिए धन्य हैं और जो लोग श्रीरामनाम के परत्व एवं महत्व में निष्ठा रखने वाले हैं वे लोग पृथिवी में धन्यातिधन्य हैं सदा कृतार्थ रूप हैं।

रामनाम जनासक्तो रामनाम जनप्रियः। स पूतो निर्विकल्पश्च सर्वपाप बहिर्मुखः।।412।।

श्रीरामनामानुरागीजनों में जो आसक्त है और श्रीरामनामानुरागीजन जिसे प्रिय हैं वही परम पवित्र है सभी कल्पनाओं से रहित है, एवं समस्त पापों से मुक्त है।

रामनाम प्रसङ्गेन ये जपन्तीह चार्जुन। तेऽपि ध्वस्ताखिलाघौंघा यान्ति रामास्पदं परम्।।413।।

हे अर्जुन ! इस संसार में जो लोग बिना श्रद्धा के प्रसंगवश श्रीरामनाम का जप किया करते हैं उनके भी सारे पाप नष्ट हो जाते हैं और वे भी भगवान् के दिव्य धाम को प्राप्त करते हैं।

घोषयेन्नाम निर्वाण कारणं यस्त्वनन्य धीः। तस्य पुण्यफलं पार्थ वक्तुं कैः शक्यते भुवि।।414।।

हे पार्थ ! अनन्यबुद्धि जो भक्त मोक्षकारण श्रीरामनाम का उच्चारण करता है उसके पुण्यफल का वर्णन पृथिवी पर कौन कर सकता है ?

तस्मान्नामानि कौन्तेय भजस्व दृढ चेतसा। रामनाम समायुक्तास्ते मे प्रियतमास्सदा।।415।।

हे कुन्ती पुत्र अर्जुन ! तुम दृढ़चित्त होकर भगवान् के नामों का भजन करो। जो लोग श्रीरामनाम से समायुक्त हैं वे मुझे सदा सर्वदा अत्यन्त प्रिय हैं।

सततं नाम गायन्ति विनिर्विण्णेन चेतसा। तेषां मध्ये सदा वासः श्रीरामस्य विशेषतः।।416।।

जो लोग खेद रहित चित्त से निरन्तर श्रीरामनाम का गान करते हैं उन लोगों के मध्य में सदासर्वदा विशेष रूप से श्रीरामजी निवास करते हैं।

श्रद्धया हेलया वाऽपि गायन्ति नाम मङ्गलम्। तेषां मध्ये परं नाम वसेन्नित्यं न संशयः।।417।।

जो श्रद्धापूर्वक अथवा अनादरभाव से महामंगलस्वरूप श्रीरामनाम का गान करते हैं उनके मध्य में नित्य श्रीरामनाम महाराज निवास करते हैं इसमें संशय नहीं है।

न तत्र विस्मयः कार्यो भवता रामनाम्नि च। सत्यं वदामि ते पार्थ प्रियाय मम चात्मने।।418।।

हे अर्जुन ! श्रीरामनाम के परत्व एवं महत्व के विषय में तुम आश्चर्य मत करना। तुम मुझे प्रिय एवं मेरी आत्मा हो इसलिए तुमसे सत्य कहता हूँ।

यन्नाम स्मरतो नित्यं महा ह्यज्ञान बन्धनम्। छिद्यते चाश्रमेणैव तमहं राघवं भजे।।419।।

जिस भगवान् श्रीराघवेन्द्र के नाम का नित्य स्मरण करने से बिना श्रम के ही महान् अज्ञान का बन्धन भी छिन्न भिन्न हो जाता है उन भगवान् श्रीराघवेन्द्र का मैं भजन करता हूँ।

श्रद्धया परया युक्तो रामनाम परायणः। करोति जानकीजानिस्तस्य चिन्तां पुनः पुनः।।420।।

जो सर्वोत्कृष्ट श्रद्धा से युक्त होकर श्रीरामनाम के परायण हैं अर्थात् भजन में लगे रहते हैं उसकी बार-बार चिन्ता श्रीजानकीनाथ भगवान् करते हैं।

अशेष पातकैर्युक्तः सर्वदोष परिप्लुतः। स पूतः सर्वपापेभ्यो यस्य नाम परन्तप।।421।।

हे शत्रुओं को तपाने वाले अर्जुन ! जो सम्पूर्ण पापों से युक्त हैं और जो सभी प्रकार के दोषों में निमग्न हैं वह भी सभी पापों से मुक्त होकर परम पवित्र हो जाता है जिसका श्रीरामनाम से सम्बन्ध हो जाता है अर्थात् जो श्रीरामनाम को अपना मानकर भजन करने लगता है।

रामनाम सदा प्रेम्णा संस्मरामि जगद्गुरुम्। क्षणं न विस्मृतिं याति सत्यं सत्यं वचो मम।।422।।

मैं सदा सर्वदा प्रेम से जगद्गुरु श्रीरामनाम का स्मरण करता हूँ। क्षण भर भी नहीं भूलता हूँ यह मेरी वाणी सत्य है सत्य है।

पर निन्दा समायुक्तः परदार परायणः। स पूतः सर्वपापेभ्यो यस्य नाम परन्तप।।423।।

हे परन्तप अर्जुन ! जो दूसरों की निन्दा करने में लगे हुए हैं और जो परस्त्री गमन करने वाले हैं वे भी सभी पापों से मुक्त हो जाते हैं जिसका श्रीरामनाम से सम्बन्ध हो जाता है।

पर हिंसा समायुक्तो लोभ मोह समाकुलः। सः पूतः सर्वपापेभ्यो यस्य नाम्नि सदा रुचिः।।424।।

जो दूसरों की हिंसा करने में लगे हुए हैं और जो लोभ मोह से सम्यक् व्याकुल हैं वे भी सभी पापों से मुक्त होकर परम पवित्र हो जाते हैं जिनकी श्रीरामनाम में सदा रूचि बनी रहती है।

अशेष पातकैर्व्याप्ताः स्वधर्म परिवर्जिताः। एते तरन्ति पापिष्ठा रामनाम प्रसादतः।।425।।

जो सम्पूर्ण पापों से पूर्णतया व्याप्त हैं और जो अपने धर्म कर्म से शून्य है ऐसे पापिष्ठ भी श्रीरामनाम की कृपा से तर जाते हैं।

तिष्ठन्ति रामनामानि तिष्ठन्ति वदनानि च। तथापि नरकेमूढाः पतन्तीत्यद्भुतं महत्।।426।।

भगवान् श्रीराम के सुन्दर-सुन्दर नाम विद्यमान हैं और सुन्दर मुख मण्डल भी विराजमान है फिर भी मूर्ख लोग नरक में गिर रहे हैं यह महान् आश्चर्य है।

गायन्ति रामनामानि कर्म कुर्वन्ति चाखिलम्। स याति परमं स्थानं रामेण सह मोदते।।427।।

जो सारे कर्मों को करते हैं और श्रीरामनाम का गान करते हैं वे लोग दिव्य धाम में जाते हैं और वहाँ श्रीरामजी के साथ आनन्द का अनुभव करते हैं।

विसृज्य रामनामानि कर्म कुर्वन्ति चाखिलम्। किमाश्चर्यं किमाश्चर्यं किमाश्चर्यं धनञ्जय।।428।।

हे अर्जुन[1] ! भगवान् श्रीराम के मधुर नामों को छोड़कर अन्य सभी कर्मों को करते हैं इससे बढ़कर आश्चर्य क्या है ? उनका सारा प्रयास व्यर्थ है।

शान्तोदान्तः क्षमाशीलो रामनामार्थ चिन्तकः। तस्य सद्गुण संख्यानं वक्तुंनैव क्षमोप्यहम्।।429।।

---

1. राम नाम अवलम्बबिनु परमारथकी आस।
   बरसत वारिद बूँद गहि चाहत चढ़न अकास।।
   राम नाम को अंक है सब साधन है शून।
   अंक गये कछु हाथ नहीं अंक रहे दस गून।।

जो मन एवं इन्द्रियों का निग्रह करते हुए श्रीरामनाम के अर्थों का चिन्तन करते हैं उनके सद्गुणों की संख्या का वर्णन मैं भी नहीं कर सकता।

विसृज्य रामनामानि कर्म कुर्वन्ति ये नराः। अप्राप्य सद्गतिं पार्थ भ्रमन्ति कर्म वर्त्मसु।।430।।

जो लोग श्रीरामनाम को छोड़कर दूसरे सारे कर्म करते हैं वे लोग सद्गति न प्राप्त करके कर्म मार्ग में ही घूमते रहते हैं।

सर्वयोनिषु कौन्तेय भ्रमन्ति ते नराधमाः। विसृज्य रामनामानि माया मोहित चेतसः।।431।।

जो श्रीरामनाम का त्याग करके माया से मोहित चित्त वाले हो गये हैं वे नराधम हैं हे अर्जुन ! वे लोग सभी योनियों में घूमते रहते हैं।

यदृच्छयापि श्रीरामनाम गृह्णन्ति सादरम्। स पूतः सर्वपापेभ्यो रामनाम प्रसादतः।।432।।

जो लोग दैववश बिना प्रेम के अथवा आदरपूर्वक श्रीरामनाम का उच्चारण करते हैं वे भी श्रीरामनाम की कृपा से सभी पापों से मुक्त होकर पवित्र हो जाते हैं।

येनकेन प्रकारेण नाममात्रैक जल्पकाः। श्रमं विनैव गच्छन्ति परे धाम्नि समादरात्।।433।।

जो लोग जिस किसी प्रकार से केवल श्रीरामनाम का उच्चारण करते हैं वे लोग बिना परिश्रम के ही सादर भगवान् के दिव्य धाम को प्राप्त करते हैं।

नामयुक्ताञ्जनान् दृष्ट्वा यः पश्येत् सादरं सखे। स याति परमं स्थानं रामेण सह मोदते।।434।।

जो लोग श्रीरामनामानुरागी साधकों को देखकर उनका आदर करते हैं हे मित्र अर्जुन ! वे भी भगवान् के दिव्य धाम साकेत में जाकर भगवान् श्रीरामजी के साथ आनन्दानुभव करते हैं।

नामयुक्ताञ्जनान् दृष्ट्वा प्रणमन्ति च ये नराः। ते पूतास्सर्वपापेभ्यः कर्मणा तेन हेतुना।।435।।

श्रीरामनामानुरागी भक्तों को देखकर जो उन्हें सादर प्रणाम करते हैं वे लोग उस कर्म के प्रभाव से सभी पापों से मुक्त होकर पवित्र हो जाते हैं।

नामयुक्ताञ्जनान् दृष्ट्वा स्निग्धो भवति यो नरः। स याति परमं स्थानं परमानन्द सागरम्।।436।।

श्रीरामनामानुरागी भक्तों का दर्शन करके जिनका चित्तभाव से द्रवित हो जाता है वे लोग भी परमानन्द सागर दिव्य लोक में जाते हैं।

गीत्वा च रामनामानि विचरेद्राम सन्निधौ। इदं ब्रवीमि ते सत्यं तस्य वश्यो जगत्पतिः।।437।।

जो लोग श्रीरामनाम का गान करते हुए श्रीरामजी के समीप विचरण करते रहते हैं अर्थात् जो भगवन्नाम संकीर्तन करते हुए भगवान् की परिक्रमा करते रहते हैं हे अर्जुन ! मैं तुमसे सत्य कहता हूँ कि उस भक्त के अधीन भगवान् हो जाते हैं।

गीत्वा च रामनामानि ये रुदन्ति नरोत्तमाः। तेषां हरिः परिक्रीतो परमेशेन संयुतः।।438।।

जो श्रेष्ठपुरुष श्रीरामनाम का गान करते हुए रुदन करते रहते हैं उनके हाथों भगवान् श्रीराम के साथ मैं बिक जाता हूँ अर्थात् उनके वश में हो जाता हूँ।

गीत्वा च रामनामेति पतन्ति भुवि ये नराः। ते वै धन्यातिधन्याश्च वैष्णवानां शिरोमणिः।।439।।

जो श्रीरामनाम का गान करते हुए पृथिवी पर गिर पड़ते हैं वे लोग धन्यातिधन्य एवं वैष्णवों में अग्रगण्य हैं।

यदृच्छया न गृह्णन्ति रामनामेति मङ्गलम्। अदृश्यास्ते जनाः पार्थ दृष्टिमात्रेण वर्जिताः।।440।।

परममंगल श्रीरामनाम का उच्चारण जो दैववश भी नहीं करते हैं हे अर्जुन ! ऐसे लोगों का दर्शन नहीं करना चाहिए यदि कदाचित् सामने आ जाये तो मुख फेर लेना चाहिए अथवा नेत्र बन्द कर लेना चाहिए तात्पर्य यह है कि विमुखों के मुख देखने से सम्भाषण से, एवं स्पर्श से पाप ताप प्राप्त होता है अतः सावधान रहना चाहिए।

स्वप्नेऽपि रामनाम्नस्तु येषामुच्चारणं नहि। भाग्यहीनास्तु ते नीचाः पापिनामग्रगामिनः।।441।।

स्वप्न में भी जिनके मुख से श्रीरामनाम का उच्चारण नहीं हुआ, वे भाग्यहीन, नीच एवं पापियों में अग्रगण्य हैं।

भिक्षया ये न गृह्णन्ति रामनाम परमेश्वरम्। लोकोपचारनिरतास्ते वै पाखण्डिनो ध्रुवम्।।442।।

जो लोग भिक्षा के कारण अर्थात् श्रीरामनाम कहेंगे तो भिक्षा नहीं मिलेगा इस भय से परमेश्वर श्रीरामनाम का उच्चारण नहीं करते हैं वे लोग लोकवासना में बंधे हुए हैं और निश्चित ही पाखण्डी हैं।

रामनाम जपाज्जीवा अनायासेन संसृतिम्। तरन्त्येव तरन्त्येव तरन्त्येव सुनिश्चितम्।।443।।

श्रीरामनाम के जप से जीव बिना परिश्रम के ही निश्चित ही संसार चक्र को तर जाते हैं तर जाते हैं तर जाते हैं।

तत्रैवार्जुनवाक्यं श्रीकृष्णं प्रति
''वहीं अर्जुनजी का वाक्य श्रीकृष्ण के प्रति''

भवत्येव भवत्येव भवत्येव महामते। सर्वपाप परिव्याप्तास्तरन्ति नामबान्धवाः।।444।।

हे महाबुद्धे ! आपने जैसा कहा वैसा ही है वैसा ही है। जो सम्पूर्ण पाप से युक्त है वह यदि श्रीरामनाम को अपना बना ले तो निश्चित ही भवसागर से पार हो जायेगा।

नमोस्तु नामरूपाय नमोस्तु नामजल्पिने। नमोस्तु नाम साध्याय वेदवेद्याय शाश्वते ।।445।।

श्रीरामनाम के परात्पर स्वरूप को नमस्कार हो, श्रीरामनाम के जप करने वालों को नमस्कार हो, 'एवं श्रीरामनाम के' परम साध्य फलस्वरूप समस्त वेदों से प्रतिपाद्य तथा अविनाशी भगवान् श्रीराम को नमस्कार हो।

नमोस्तु नाम नित्याय नमो नामप्रभाविने। नमोस्तु नामशुद्धाय नमो नाममयाय च।।446।।

नित्यस्वरूप, परम प्रभावी, परम विशुद्ध और समस्त नाममय श्रीरामनाम को नमस्कार हो।

श्रीरामनाम माहात्म्यं यः पठेच्छ्रद्धयान्वितः। स याति परमं स्थानं रामनाम प्रसादतः।।447।।

जो श्रद्धाभक्ति से युक्त होकर श्रीरामनाम के माहात्म्य को पढेगा वह श्रीरामनाम की कृपा से सर्वोत्कृष्ट स्थान को प्राप्त करेगा।

रामनामार्थमुत्कृष्टं पवित्रं पावनं परम्। ये ध्यायन्ति सदा स्नेहात्ते कृतार्थाः जगत्त्रये।।448।।

जो श्रीरामनाम के उत्कृष्ट पवित्र एवं परम पावन अर्थों का सदा सर्वदा स्नेहपूर्वक चिन्तन करते हैं वे लोग तीनों लोकों में कृतार्थ हैं।